B.A Part-I (Hons)
Paper-I Sub: Geography

TOPIC:- CONTINENTAL DRIFT THEORY OF WEGENER (WEGNER)

वेगनर का महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धान्त

महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धान्त का प्रतिपादन एफ० बी० टेलर (F.B. Taylor) तथा ए० वेगनर (A. Wegener) दोनों ने किया था। अल्फ्रेड वेगनर ने इसको एक व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत किया है जिस कारण यह सिद्धान्त उन्हीं के नाम से जाना जाता है। अल्फ्रेड वेगनर जर्मनी के जलवायु एवं भूगर्भशास्त्री थे इन्होंने जन्तु विज्ञानियों, वनस्पति शास्त्रियों तथा भूगर्भ वैज्ञानिकों के बाहुल्य आधारों पर अध्ययन किया, तत्पश्चात जलवायु की भिन्नता के आधार पर इस सिद्धान्त का प्रतिपादन सन् 1912 ई० में किया था। सन 1915 ई० तथा 1920 ई० में इसकी विवेचना की गयी। द्वितीय विश्व युद्ध के कारण काफी समय तक यह महत्वपूर्ण सिद्धान्त अनेक विद्वानों के नजर से ओझल था।

महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धान्त का प्रमुख आधार जलवायु की भिन्नता है। वेगनर ने स्पष्ट किया कि अण्टार्कटिका महाद्वीप के कोयले का पाया जाना यह प्रमाणित करता है कि कभी यहाँ पर उष्णार्द्र प्रकार की जलवायु थी। सघन वनस्पतियों का आवरण था। वनस्पतियों का आवरण कोयले के रूप में परिवर्तित हो गया। वर्तमान समय में यहां हिमावरण है। भारत में हिमावरण के चिह्न हिमानी गोलाश्म के रूप में पाये जाते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि भारत प्रायद्वीप की जलवायु कभी ठंडी थी। वर्तमान समय में उष्ण प्रकार की है। दक्षिणी अमेरिका तथा अफ्रीका में भी हिमानी के चिह्न मिलते हैं। वर्तमान समय में यहां की जलवायु गर्म तथा उष्ण है। इन तथ्यों के आधार पर स्पष्ट है कि

(1) यदि स्थल भाग अपने स्थान पर स्थित रहे होंगे तो जलवायु कटिबन्धों का स्थानान्तरण हुआ होगा। फलस्वरूप कभी कभी, कभी शीत, कभी उष्ण तथा कभी उष्णार्द्र प्रकार की जलवायु का विस्तार रहा होगा। परन्तु जलवायु कटिबन्धों के स्थानान्तरण का कोई ठोस प्रमाण नहीं प्राप्त होता है।

(2) यदि जलवायु कटिबन्ध स्थिर थे तो स्थल भाग अपने स्थान से स्थानान्तरित हुए होंगे। स्थल खण्डों के स्थानान्तरण के अनेक प्रमाण उपलब्ध है।

इसे टेथीज का खुलना (opening of Tethys) की संज्ञा प्रदान की। जुरासिक युग में गोंडवानालैण्ड का विखण्डन हो गया। फलस्वरूप दक्षिणी प्रायद्वीप भारत, आस्ट्रेलिया, अण्टार्कटिका, अफ्रीका एक दूसरे से पृथक हो गये। ज्वारीय बल के प्रभाव से ये सभी स्थल खण्ड सिमा पर तैरते हुए दूर चले गये। इसी बल से इसी काल में उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका क्रमशः यूरोप तथा अफ्रीका से पृथक हो कर पश्चिम की दिशा में प्रवाहित होने लगे। इन दोनों के पश्चिम को प्रवाह के कारण अटलान्टिक महासागर का उद्भव हुआ। इसी प्रायद्वीप भारत का उत्तर, आस्ट्रेलिया का पूरब तथा अण्टार्कटिका का दक्षिण की ओर प्रवाह हुआ जिससे हिन्द महासागर का उद्भव हुआ

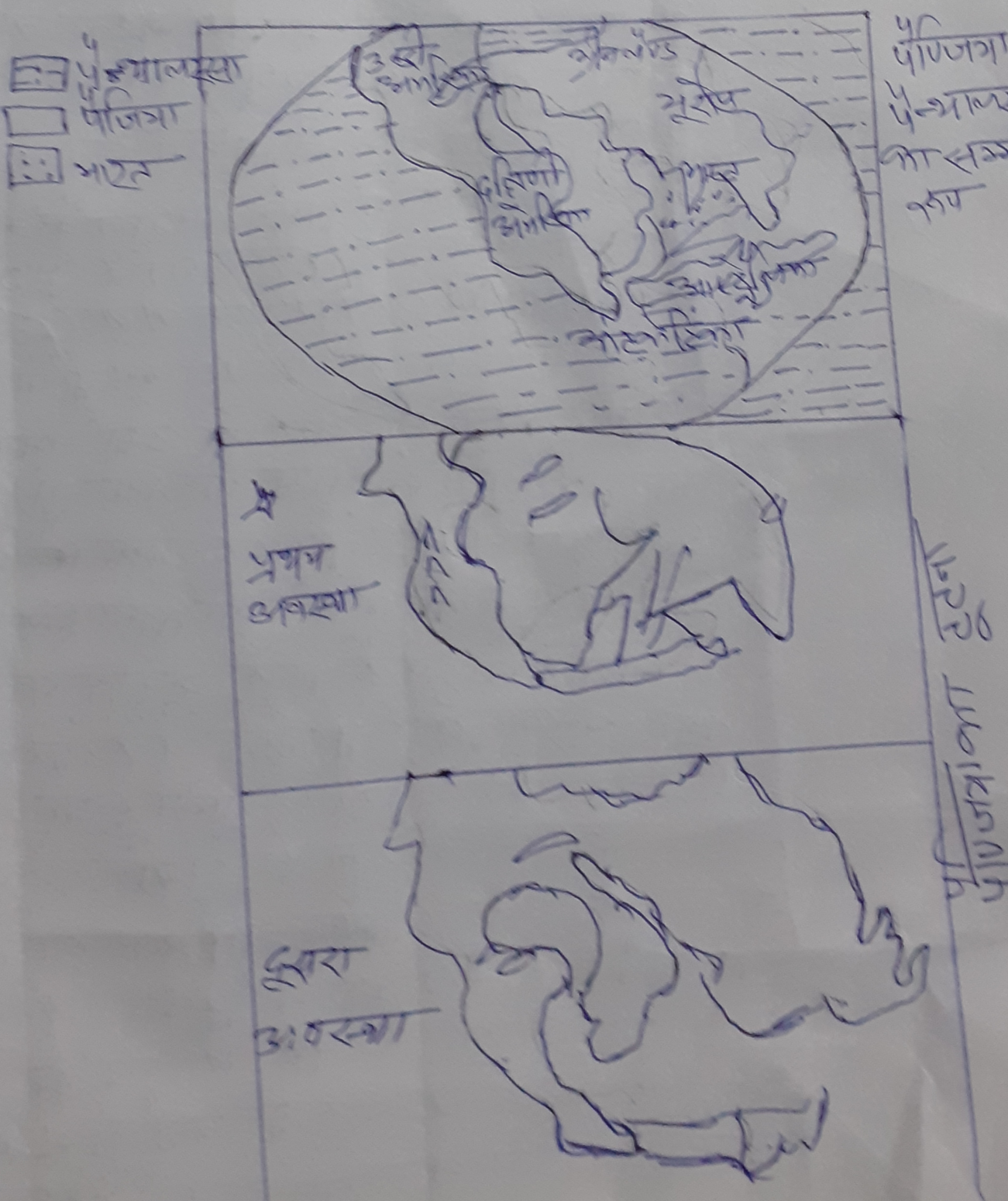

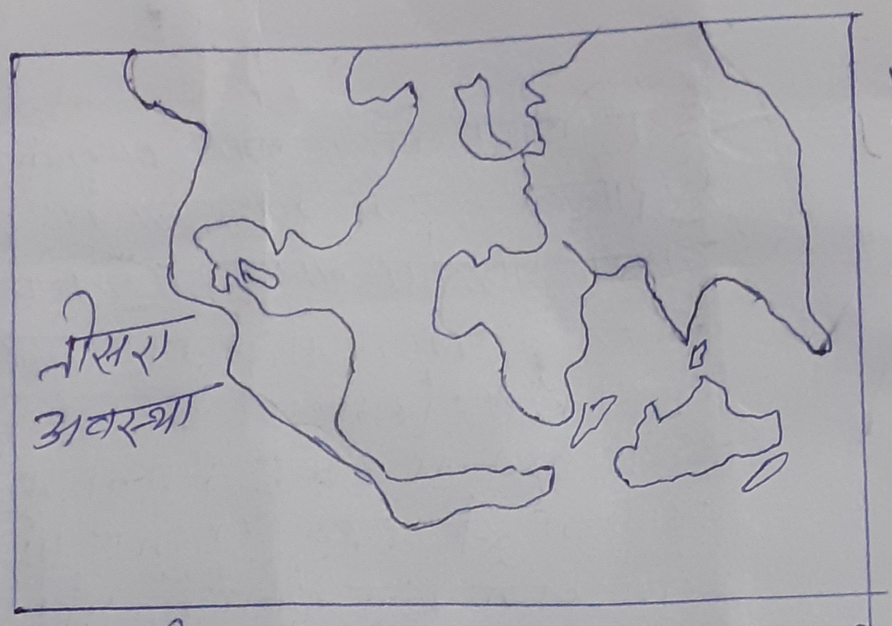

पैन्जिया के टूटने का अवस्था

स्थलखण्डों की प्रवाह गति समान नहीं थी। बीच-बीच में इनमें व्यवधान उत्पन्न हुआ था। महासागरों के मध्य में कटकों का निर्माण हो गया। जैसे-जैसे स्थलखण्डों का अतिक्रमण पैन्थालसा पर बढ़ता गया जिससे इसका आकार छोटा होता गया। वर्तमान समय में इसे प्रशान्त महासागर के नाम से जानते हैं।

वेगनर ने अपने सिद्धान्त में महाद्वीपों के प्रवाह के लिए दो बलों की कल्पना की है (i) गुरुत्व बल (Gravity force) तथा (ii) प्लवनशीलता बल (Force of buoyancy)। इन दो बलों के आधार पर महाद्वीपों का प्रवाह दो दिशाओं (i) भूमध्य रेखा की ओर जो उस समय वर्तमान आल्पाइन पर्वत श्रेणियों के पास थी तथा (ii) पश्चिम की ओर हुआ था। वेगनर ने यह कल्पना की किया की महाद्वीप सियाल (Sial) के बने है जो सिमा (Sima) पर तैर रहे हैं। प्लवनशीलता के बल वाले गुरुत्व बल के नीचे होने तथा चन्द्रमा के आकर्षण बल के कारण महाद्वीपों के पश्चिम की ओर विस्थापित हुआ।

अपने अध्ययन से वेगनर ने स्पष्ट किया कि जब उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका का पश्चिम की ओर विस्थापित हो रहा था तो सिमा (Sima) के अवरोध के कारण इनके पश्चिम किनारे पर मोड़ पड़ गयी थी ये मोड़ निरन्तर बढ़ती गयी जिसकारण रॉकी तथा एण्डीज पर्वतों का निर्माण हुआ। इस प्रकार यूरेशिया

प्रायद्वीप भारत तथा अफ्रीका का भूमध्य रेखा की ओर विस्थापन। हुआ था। फलस्वरूप हिमालय तथा आल्प्स पर्वतों का निर्माण हुआ है। वास्तव में अफ्रीका एवं प्रायद्वीप भारत तथा यूरेशिया के मध्य टेथीज भूसन्नति थी। इसमें मलवा भी विशाल राशि नदियों द्वारा लाया जाता गया थी। जब प्रायद्वीप भारत तथा अफ्रीका का उत्तर तथा यूरेशिया का दक्षिण की ओर विस्थापन हुआ तब मलवा में मोड़ पड़ने लगी। फलस्वरूप इन पर्वत श्रेणियों का निर्माण हुआ है।

वेगनर का विचार है कि समुद्री द्वीपमाला तोरण (island festoom) की उत्पत्ति महाद्वीपों के विस्थापन में आति के कारण हुई है। एशिया के पूर्वी तटों पर विशाल द्वीपों की उत्पत्ति एशिया के पश्चिम दिशा में खिसकाव तथा पश्चिमी द्वीपसमूह की उत्पत्ति उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका के पश्चिम दिशा में विस्थापन के ज्वारीय बल के कारण कुछ भाग पीछे छूट जाने से हुआ। यह छूटे हुए भागों के विषय में स्पष्ट किया है कि इनका सम्बन्ध समुद्र तली से था।

सिद्धान्त के पक्ष में प्रमाण: वेगनर अपने सिद्धान्त की पुष्टि के लिए अनेक प्रमाण प्रस्तुत किया। वेगनर ने सिद्ध किया जा सकता है कि कार्बोनिफेरस युग में सभी स्थलभाग एक में संलग्न था। कालान्तर में गुरुत्व एवं प्लवन बल के कारण इन का विस्थापन हुआ था।

i) वेगनर ने स्पष्ट किया है कि अटलाण्टिक महासागर के दोनों तट एक दूसरे से मिलाये जा सकते हैं। दक्षिणी अमेरिका का पूर्वी तट का आगे निकला हुआ भाग अफ्रीका के पश्चिमी तट (गिनी तट) से मिली

दक्षिणी अमेरिका और अफ्रीका की प्राचीन संगठित स्थिति

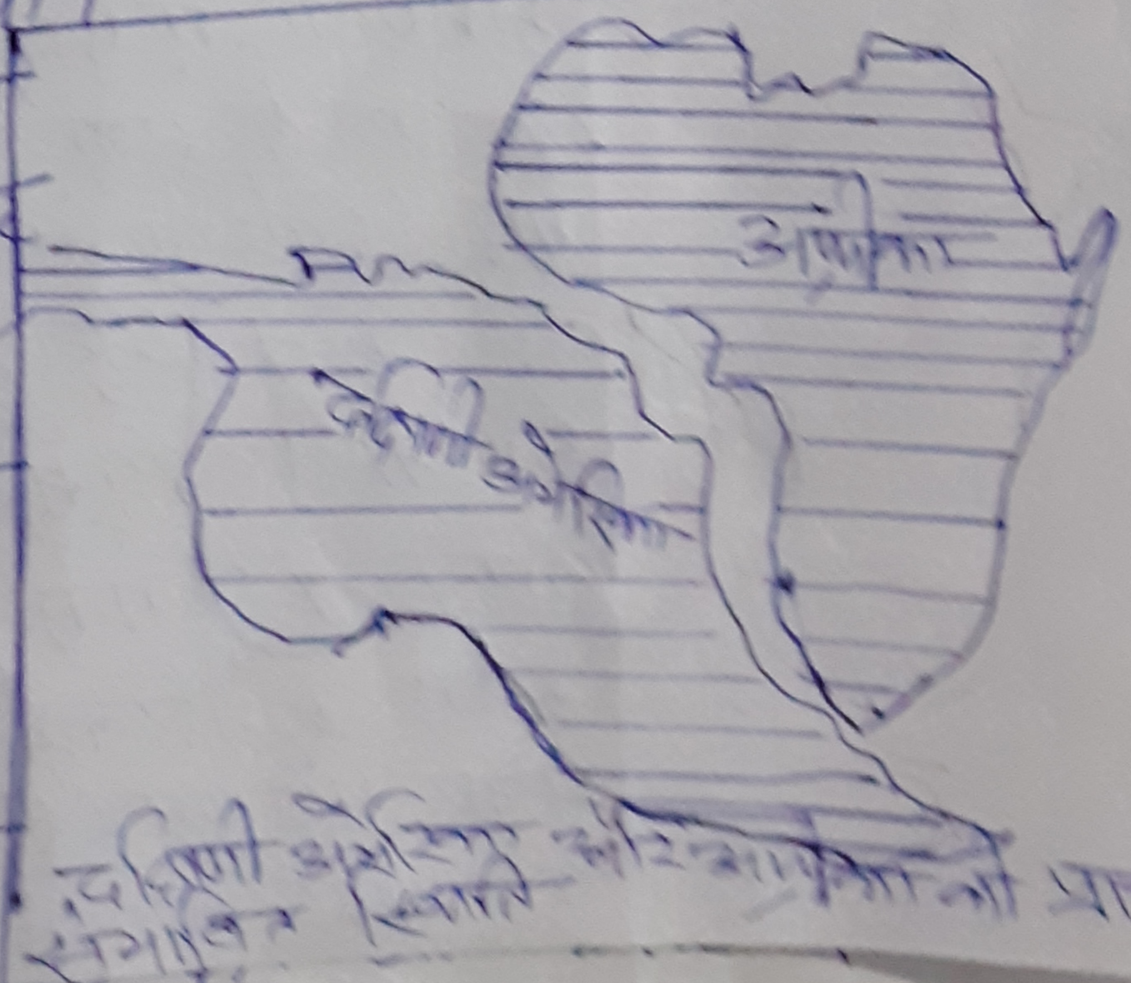

भली प्रकार सटाया जा सकता है। इसी प्रकार ग्रीनलैण्ड, न्यूफाउण्डलैण्ड एवं एलिसमीरलैंड पूर्वी-उत्तरी अमेरिका तथा पश्चिमी यूरोप के भाग से भली प्रकार सम्बद्ध हो सकता है। इस प्रकार के निर्णय में जलमग्न तट की बनावट का ध्यान रखा जाना आवश्यक है।

(2) भूगर्भशास्त्रियों ने अन्ध महासागर के दोनों तटों की चट्टानों एवं पर्वत-श्रेणियों का अध्ययन किया है जिससे परिणाम पर पहुँचे कि दोनों तटों की चट्टानों और पर्वत-श्रेणियों में बड़ा भारी समानता है। ये न केवल भूगर्भिक इतिहास बल्कि संरचना की दृष्टि में भी समानता है। यह समानता चट्टानों के नमन (Dip) और मोड़ रेखाओं (Fold lines) की दिशा आदि से भी स्पष्ट प्रतीत होता है। यूरोप, अफ्रीका और अमेरिका के पर्वतों की बनावट के अध्ययन से यह प्रकट होता है कि इन सब पर्वतों को निक्षेप लगभग एक समान है। यहाँ तक कि ब्राजील के पठार, दक्षिणी अफ्रीका, केप के पठार एवं आस्ट्रेलिया के पठार की बनावट में भी बहुत समानता पायी जाती है। दक्षिणी अमेरिका एवं दक्षिणी अफ्रीका से निकलने वाले खनिजों की समानता से भी यह सिद्ध होता है कि ये भू-भाग किसी समय एक थे।

(3) साम्य स्थापना का समर्थन करते हुए ई०बी० बेली (E.B. Baily) ने अन्य नई प्रमाण प्रस्तुत किया है। यूरोप तथा उत्तरी अफ्रीका में पाये हुए हरसीनियन मोड़ (Hercynian folds) की एक ही रेखा पर आकार बनाते हैं। उत्तरी ब्रिटेन की केलिडोनियन मोड़ (Caledonian folds) पश्चिम में हरसीनियन श्रेणियों की ओर झुकते हैं। दक्षिणी वेल्स तथा आयरलैंड में ये श्रेणियाँ एक दूसरे से मिलती हैं और एक दूसरे को पार करने लगती हैं। एक दूसरे को पार करने की यह क्रिया उत्तरी अमेरिका में पेंसिलवेनिया में पूरी होती है। इसी प्रकार पश्चिम (स्कॉटलैण्ड की केलिडोनियन श्रेणी-पूर्वी ग्रीनलैण्ड तथा फैली हुई देखी जा सकती है।

④ डु टोयट (A. L. Du Toit) ने 1927 ई० में दक्षिणी अटलांटिक महा-
सागर के दोनों ओर भू-वैज्ञानिक अध्ययन करके [illegible]
उनमें अद्भुत समानता पायी। उन्होंने देखा [illegible]
गोंडवाना [illegible] के [illegible] दक्षिणी
अफ्रीका को [illegible] हुए है। इसी प्रकार गोंडवाना
(Gondwana) [illegible] अंटार्कटिका [illegible]
और दक्षिणी अफ्रीका के [illegible] है।
दक्षिणी अमेरिका और दक्षिणी अफ्रीका के दोनों [illegible]
सम्बन्धी [illegible] समानता [illegible]
समानता। डु टोयट ने यह भी बताया कि [illegible]
नहीं पायी जाती है। सम्भव है कि दोनों महाद्वीपों के बीच
400 से 800 किलोमीटर चौड़ा [illegible]
द्वारा विलीन हो गया होगा। [illegible] में [illegible]
की उपस्थिति [illegible] की पुष्टि करता है।

⑤ महाद्वीपों के विस्थापन के लिए [illegible]
का उल्लेख किया है, उसकी [illegible]
है, जिनमें श्वाइडर (Schweydar) ने 1912 ई० में [illegible]
तीसरी शक्ति की खोज की [illegible] विस्थापन [illegible]
यह शक्ति पृथ्वी की धुरी का [illegible]
(Precession of the Earth's Axis) [illegible]
के द्वारा इन्होंने महाद्वीपों का विस्थापन [illegible]
तथा विषुवत रेखा की ओर [illegible] बतलाया।

⑥ [illegible]
से पश्चिम दिशा में [illegible]
विश्वास किया जाता है कि यह [illegible]
का विस्तार था [illegible]
दिशा में गति करते है।

⑦ अन्ध महासागर के दोनों ओर [illegible]

B.A Part-II (Hons)
Paper-III Geography

TOPIC: COTTON TEXTILES INDUSTRY IN INDIA

भारत: सूती वस्त्र उद्योग

सूती वस्त्र निर्माण का प्रारम्भ सम्भवतः भारत में ही हुआ है। कई शताब्दियों तक वस्त्र हाथ से बुने जाते रहे हैं। आधुनिक सूती वस्त्र उद्योग का प्रारम्भ अट्ठारहवीं (18वीं) शताब्दी में हारग्रीव्स द्वारा 'स्पिनिंग जेनी' क्राम्पटन द्वारा 'म्यूल' कार्टराइट द्वारा शक्तिचालित करघा तथा ब्रिटेन में वाटन जिन एवं भाप के इंजन के आविष्कारों के बाद हुआ। इन आविष्कारों ने ग्रेट ब्रिटेन में सूती वस्त्रोद्योग का तेजी से विकास हुआ। वहाँ से यह अन्य यूरोपीय देश संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान तथा भारत में 19वीं शताब्दी में फैला।

वस्त्र निर्माण प्रक्रियाएँ: वस्त्रोद्योग में अनेक प्रक्रम सम्मिलित हैं, जैसे कि-कपास ओटना (ginning) धुनना (carding), कातना (spining), बुनना (weaving) तथा रंगना (dyeing) एवं क्लोरीन करना (bleaching)। कपास ओटने का अर्थ है बिनौले से रेशा अलग करना। यह कार्य कपास उत्पादक क्षेत्रों में स्थित ओटाई के कारखानों (Ginneries) में किया जाता है। शेष कार्य कारखानों में किये जाते हैं। जिन कारखानों में ये चारों प्रक्रम सम्पादित होते हैं उन्हें समेकित कारखाना (Integrated mill) कहा जाता है।

सूती वस्त्र उद्योग की अवस्थापना के कारक (Factors of Location of Cotton Textile industry): सूती वस्त्रोद्योग की अवस्थापना निम्नलिखित कारकों द्वारा निर्धारित होती है—

① कच्चा माल (ii) औद्योगिक शक्ति (iii) जल आपूर्ति (iv) आर्द्रता (v) श्रम (vi) परिवहन के साधन (vii) बाजार एवं (viii) पूँजी।

भारत में सूती वस्त्रोद्योग का ऐतिहासिक विकास (Historical Development of Cotton Textile industry in India):—

देश में प्रथम सूती वस्त्र कारखाना 1818 में कोलकाता के निकट स्थापित किया गया था, किन्तु यह प्रयास विफल रहा। देश का प्रथम सफल कारखाना मुम्बई में 1851 में स्थापित

किया गया। देश में बाजारों तथा कपास उत्पादक क्षेत्रों के निकट, पहले अहमदाबाद, फिर कानपुर, नागपुर, शोलापुर आदि में सूती वस्त्र के कारखाने स्थापित किया गया। 1925 से 1945 ई० के मध्य स्वदेशी आन्दोलन, विदेशी संरक्षण, जापानी बाजारों की हानि तथा विश्व युद्ध ने इस उद्योग को बहुत प्रोत्साहन दिया। सूती वस्त्र के कारखानों की संख्या 1926 में 334 से बढ़कर 1945 में 417 पहुँच गयी। किन्तु 1947 में देश के विभाजन से उद्योग पर कुठाराघात हुआ क्योंकि लम्बे रेशे वाली कपास उगाने का भूभाग 22% क्षेत्र तथा 14 कारखाने पाकिस्तान में चले गये। भारत में 409 कारखाने शेष रह गया। देश को कच्चे माल की कमी का गम्भीर संकट झेलना पड़ा जिसे देशी उत्पादन तथा आयात में वृद्धि करके पूरा किया गया।

आज 2001 में देश में 1846 कारखाने, 35530 हजार तकुए (Spindles) तथा 123 हजार करघे (Looms) हैं। भारत में सूती कारखानों के दो प्रकार हैं (i) कताई मिल तथा (ii) संयुक्त (कताई एवं बुनाई) मिल।

भारत में सूती वस्त्र उद्योग का वितरण (Distribution of Cotton Textiles industry in India) :— सूती वस्त्र विनिर्माण उद्योग को अनेक प्रकार के लोगों की सुविधा के अनुरूप भारत के ~~विभि~~ विभिन्न राज्यों में वितरण इस प्रकार है:

महाराष्ट्र — महाराष्ट्र में 122 कारखानों, 23.4% तकुओं तथा लगभग 37% करघों सहित, देश का 12% कारखाना-निर्मित सूती धागा तथा 46.2% कारखाना निर्मित सूती वस्त्र तैयार करता है। मुम्बई देश का वृहत्तम सूती वस्त्रों का केन्द्र है जहाँ देश के 16.4% तकुए तथा 29.5% करघे पाये जाते हैं। मुम्बई को उद्योग के पूर्वारम्भ, कच्चे माल की निकटता, दक्ष श्रम, पूँजी, पत्तन, परिवहन, बाजार तथा समुद्री जलवायु की सुविधाएं प्राप्त हैं। इसे "भारत का कॉटनोपोलिस" कहा जाता है। शोलापुर, पुणे, नागपुर, जलगांव

गुजरात : गुजरात में 130 कारखाने देश के लगभग 19% तकुओं तथा 30.7% करघे सहित वस्त्र कुल की विकसित सम्पन्न राज्य है। इसे कच्चे माल, वृहत बाजार, पूँजी, पत्तन तथा परिवहन की सुविधाएँ प्राप्त हैं। यह देश का 25% सूती धागा तथा 28% कारखाना निर्मित वस्त्र तैयार करता है। अहमदाबाद वृहत्तम सूती वस्त्रोद्योग केन्द्र है जहाँ 51 कारखाने देश के 12.7% तकुए तथा करघे विद्यमान हैं। भरुच, बड़ोदरा, राजकोट, भावनगर, कालोल, सूरत, खम्भात, मोर्वी आदि राज्य के अन्य महत्वपूर्ण वस्त्रोत्पादक केन्द्र हैं।

तमिलनाडु : तमिलनाडु में सर्वाधिक कारखाने 215 कोयम्बटूर तथा देश के लगभग 3% करघे एवं 25% तकुए स्थित हैं। यहां देश का 42% कारखाना निर्मित सूती धागे का उत्पादन होता है। वस्त्र उत्पादन (9.5%) में इसका देश में तृतीय स्थान है। यहाँ कच्चे माल, श्रम, सस्ती जल विद्युत तथा बाजार की सुविधाएँ प्राप्त हैं। कोयम्बटूर में 81 कारखाने हैं जो यह वृहत्तम वस्त्रोत्पादक केन्द्र है। चेन्नई मदुरै, तिरुनेलवेली, तूतीकोरिन, सलेम, विरुधुनगर, उदुमलपेट, ओलाची आदि अन्य महत्वपूर्ण वस्त्रोत्पादक केन्द्र हैं।

उत्तर प्रदेश :- उत्तर प्रदेश में 50 सूती वस्त्र के कारखाने (सकर्मक मिल तथा मिश्रित) तथा देश के 6% से अधिक तकुए एवं करघे स्थित हैं। यह देश का 2.25% कारखाना निर्मित सूती धागा का 2.7% सूती वस्त्र उत्पादन करता है। राज्य को कच्चे माल, श्रम, बाजार, परिवहन आदि सभी सुविधाएँ प्राप्त हैं लेकिन बार-बार। विद्युत कटौती की असुविधा है। कानपुर में 14 कारखाना है जो एक अग्रणी वस्त्रोत्पादक केन्द्र है। मुरादाबाद, मोदीनगर, अलीगढ़, आगरा, इटावा, सहारनपुर, हाथरस, रामपुर, मेरठ, गाजियाबाद, बरेली आदि अन्य महत्वपूर्ण केन्द्र हैं।

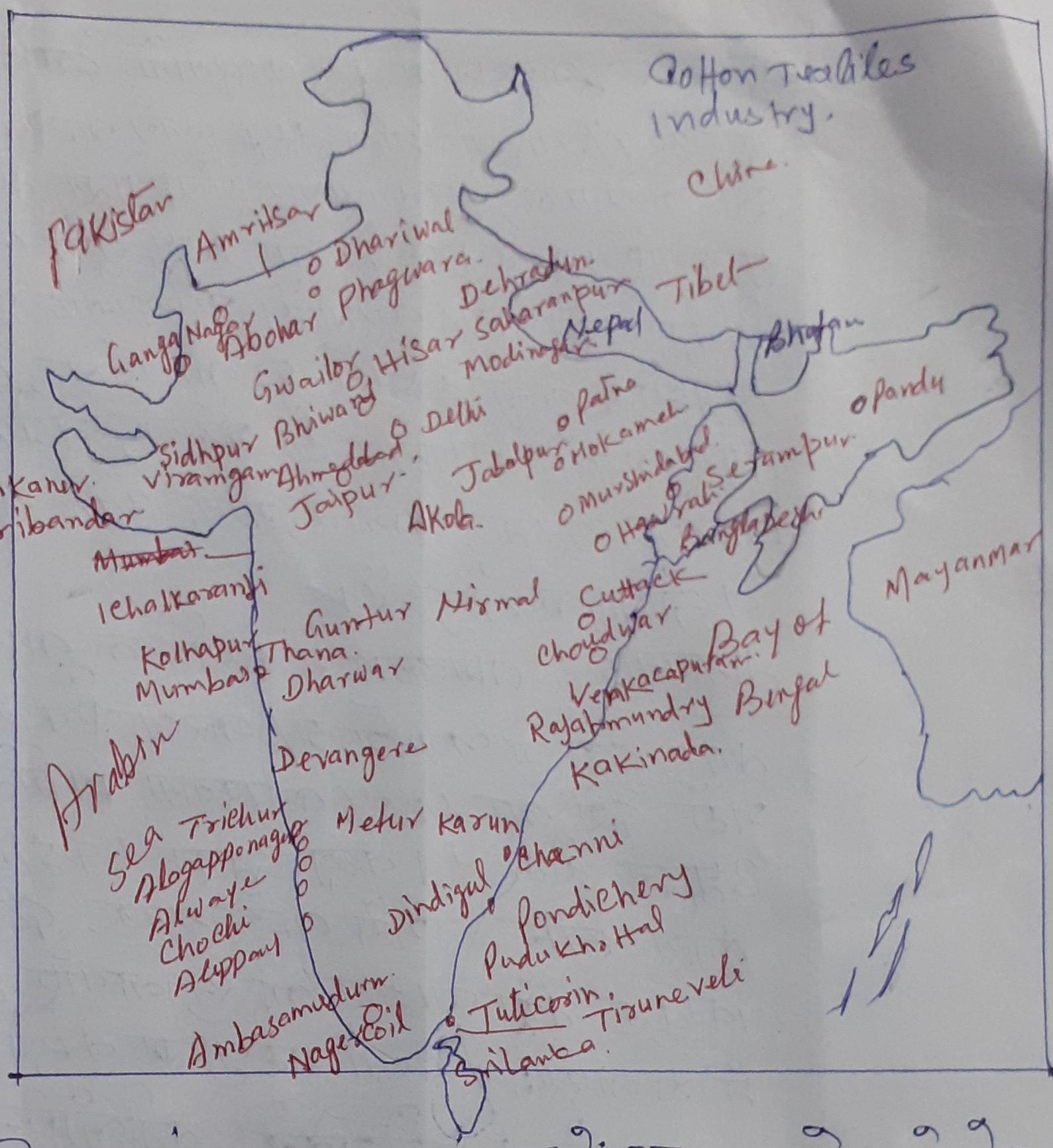

पश्चिम बंगाल: प० बंगाल में 55 कारखाने जो देश का लगभग 5% कपड़े तथा लगभग 3% धागा तथा वस्त्र उत्पादन होता है। प० बंगाल को बाजार, सस्ता श्रम, सस्ती शक्ति, परिवहन आदि लाभ प्राप्त हैं जो इस उद्योग के लिये आवश्यक है। कोलकाता वृहत्तम वस्त्रोत्पादक केन्द्र है। हावड़ा, सोदपुर, सेरामपुर, श्यामपुरनगर, मुर्शिदाबाद, सैकिया, पनिहाटी, पीरगाम आदि अन्य महत्वपूर्ण केन्द्र हैं।

कर्नाटक: कर्नाटक राज्य में 45 कारखाने स्थित हैं तथा देश का 2.9% कारखाना निर्मित सूती धागा तथा 0.6% वस्त्र तैयार होता है। राज्य को बाजार, सस्ता श्रम, सस्ती शक्ति, परिवहन आदि लाभ प्राप्त है जो इस उद्योग के विकास के लिए आवश्यक है। ~~कोलकाता~~ वृहत्तम राज्य में हथकरघा तथा शक्ति-चालित करघा उद्योग भी उन्नत है। अधिकांश

50

कारखाने बंगलौर, मैसूर, हुबली, बेलारी, देवांगेरे, गोकक, गुलबर्गा तथा चित्रदुर्ग में स्थित है।

आन्ध्र प्रदेश :- इस राज्य में 60 कारखाने हैं जिनमें से 31 कताई मिल है। अधिकांश कारखाने तेलंगाना के कपास उत्पादन क्षेत्रों में अवस्थित है जो केवल धागा उत्पादन करते हैं। हैदराबाद, वारंगल, गुन्टूर, अन्दोरी, रामागुण्डम, गुंतकल तथा तिरुपति प्रमुख वस्त्र उत्पादन केन्द्र हैं।

मध्य प्रदेश :- मध्य प्रदेश में 34 कारखाने स्थित है जो भारत का 4% धागा एवं वस्त्र उत्पादन करते है। प्रमुख नगर इन्दौर, ग्वालियर, उज्जैन, नागदा, देवास, भोपाल, जबलपुर, बुरहानपुर, राजनन्दगाँव, रतलाम तथा मन्दसौर प्रमुख वस्त्र उत्पादक केन्द्र है।

राजस्थान : इस राज्य में 35 कारखाने है जो भारत का 3.5% धागा एवं वस्त्र उत्पादन करता है। श्री गंगानगर, भीलवाड़ा, जयपुर, उदयपुर, कोटा, ब्यावर, पाली, विजयनगर, किशनगढ़ आदि प्रमुख केन्द्र है।

केरल : केरल राज्य में 29 कारखाने स्थित है जो देश का 1.5% सूती धागा तथा 0.7% सूती वस्त्र तैयार करता है। यह मुख्य रूप से कुटीर तथा हथकरघा उद्योग के रूप में विकसित है। प्रमुख वस्त्रोत्पादक केन्द्रों में अलवाए, कोचि, अलगप्पानगर तथा अलापुझा उल्लेखनीय है।

इसके एलावे सूती वस्त्रोत्पादक राज्य पंजाब में 8 कारखाने, ~~हरियाणा~~ हरियाणा में 10 कारखाना, उड़ीसा में 10 कारखाना, बिहार में 6 कारखाने, दिल्ली में 4 कारखाने तथा पाण्डिचेरी में 5 कारखाने हैं।

उत्पादन (Production) : देश में सूती वस्त्रोत्पादन 1950-51 में ~~65~~ 4215 मिलियन वर्ग मीटर से बढ़कर 2003-04 में 18,040 मि मिलियन

दृष्टिगोचर हो गया। लेकिन यह सच है कि 1950-51 में कारखाना क्षेत्र का अंशदान कुल वस्त्रोत्पादन में 80.7% तथा विकेन्द्रित क्षेत्र का 19.1% था। 1980-81 तक विकेन्द्रित क्षेत्र ने कारखाना क्षेत्र को पछाड़ दिया। 2003-04 तक कारखाना क्षेत्र का अंशदान घट कर मात्र 5.4% रह गया, जबकि विकेन्द्रित क्षेत्र का 94.6% उत्पादन तथा हथकरघा क्षेत्र ने प्रभावशाली योगदान दर्ज किया।

निम्न तालिका में सूती धागे तथा धागों का राज्यवार उत्पादन इस प्रकार है।

सूती एवं धागों का उत्पादन 2002-03

राज्य	सूती धागे हजार टन	धागा	सूती वस्त्र मिलियन	प्रतिशत
आन्ध्र प्रदेश	82	3.77	—	—
गुजरात	176	8.08	3217.75	33.05
केरल	30	1.38	63.42	0.65
मध्य प्रदेश	98	4.50	473.05	4.87
महाराष्ट्र	235	10.79	3322.57	34.38
कर्नाटक	66	3.03	72.22	0.74
पंजाब	203	9.32	557.84	5.75
राजस्थान	78	3.58	283.54	2.92
तमिलनाडु	968	44.46	649.44	6.69
उत्तर प्रदेश	46	2.11	323.86	3.34
पश्चिम बंगाल	43	1.98	—	—
हरियाणा	98	4.50	—	—
पाण्डिचेरी	13	0.60	243.57	2.51
भारत	2177	100.00	9707.56	100.00

निम्न तालिका सूती धागे तथा वस्त्र के उत्पादन की प्रगति

वर्ष	धागा (मिलियन किलोग्राम)	कारखाना क्षेत्र	विकेन्द्रित क्षेत्र	योग
1950-51	533	3401	814	4215
1960-61	788	4649	2084	6733

1970-71	629	4055	3547	7602
1980-81	1067	3434	4954	8365
1990-91	1510	1819	13572	15431
2000-01	2267	1106	18612	19618
2001-02	2212	1036	18733	19769
2002-03	2177	1019	18281	19500
2003-04	2121	969	17071	18040

हथकरघा क्षेत्र :- भारत की स्वतन्त्रता के बाद हथकरघा क्षेत्र में अधिक विकास हुआ है। यह क्षेत्र 6.5 मिलियन से अधिक लोगों को रोजगार उपलब्ध कराता है। देश का 13% से अधिक वस्त्र उत्पादन करता है। देश में लगभग 38 लाख हथकरघों का अनुमान है यह उद्योग देशभर में व्यापक क्षेत्रों में ~~विस्तृत~~ वितरित है किंतु नगरों तथा ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष रूप से केन्द्रीत है। तमिलनाडु, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, आसाम तथा आन्ध्र प्रदेश देश का 50% से अधिक हैण्डलूम वस्त्र उत्पादन करता है।

शक्तिचालित करघा क्षेत्र. भारत में पावरलूमों की संख्या 3.4 लाख है। महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल तथा तमिलनाडु में अधिक संख्या में है। देश में वस्त्रों की मांग पूरी करने में पावरलूम की बहुत अधिक भूमिका है। यह देश का 80% से अधिक का वस्त्र उत्पादन करता है। पावरलूम को विकसित करने के लिये सरकार ने अधिक योजनाएँ चालू की है। जैसे- पावरलूम सर्विस सेन्टर (PSC), कम्प्यूटर एडेड डिजाइन सेन्टर (CAD) पावरलूम वर्कर्स ग्रुप इन्श्योरेन्स स्कीम, पावरलूम डेवलेपमेंट एक्सपोर्ट प्रमोशन काउन्सिल।

निर्यात : भारत विश्व का दूसरा अधिक निर्यातक देश है। यह देश के कुल निर्यातों में विगत कुछ वर्षों में

सूती धागे तथा वस्त्र का अंशदान प्रतिशत कहा है। कि
यह भारतीय निर्यातों का प्रमुख मद है। 1960-61 में
धागे तथा वस्त्रों के निर्यात का कुल निर्यात मूल्य में
योगदान था, जो 2002-3 में घट कर 6.0% रह गया

भारत के सूती वस्त्रों का ब्रिटेन, रूस, संयुक्त रा
आस्ट्रेलिया, फ्रांस, सिंगापुर इत्यादि देशों अधिकां